बेरोजगारी के मरुस्थल पर दौड़ती कागज़ की नाव

लेखक
श्यामसुंदर पाण्डेय
हिन्दी विभाग, बी. के. बिड़ला महाविद्यालय(स्वायत्त), कल्याण
ई - मेल :
ssdpandey1@gmail.com

सार(Abstract):— 'यहाँ आये सारे के सारे मेहनतकश आधुनिक बंधुआ मजदूर हैं, जो मेहनत के बाद नमक - रोटी की जगह अच्छा खाते , चैन से सोते हैं और सुबह - शाम मालिकों की प्रताड़ना, जूते-लात और साहूकारों के अत्याचारों, उनके ऋण के तकाजों से मुक्त हैं |' नंगे पैर फिरने की जगह जूते पहने हैं, पैदल चलने की जगह वातानुकूलित बस में चलते हैं और हवाई जहाज से आते-जाते हैं मगर अन्दर की स्थितियाँ तो वही ढाक के तीन पात

बीज शब्द- प्रताड़ना, ढाक के तीन पात, श्रमिकों, रोजगार, विश्व बाजार।

'यहाँ आये सारे के सारे मेहनतकश आधुनिक बंधुआ मजदूर हैं, जो मेहनत के बाद नमक - रोटी की जगह अच्छा खाते , चैन से सोते हैं और सुबह - शाम मालिकों की प्रताड़ना, जूते-लात और साहूकारों के अत्याचारों, उनके ऋण के तकाजों से मुक्त हैं |' नंगे पैर फिरने की जगह जूते पहने हैं, पैदल चलने की जगह वातानुकूलित बस में चलते हैं और हवाई जहाज से आते-जाते हैं मगर अन्दर की स्थितियाँ तो वही ढाक के तीन पात|' (पृ. 201)

कहते हैं भारतीय संसद का रास्ता बिहार और उत्तर प्रदेश से होकर ही गुजरता है| जिस राजनीतिक दल की चुनावी फसल इन प्रदेशों में सबसे अच्छी होती है उसके संसद में सत्तसीन होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं | आज़ादी के बाद से अब तक इन प्रदेशों नें प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के रूप में भी कई प्रतिनिधि दिये हैं | प्रकृति भी इस क्षेत्र के प्रति विशेष उदार रही है | जो समतल और उपजाऊ जमीन इन क्षेत्रों में मिलती है वह अन्य प्रदेशों में कम ही है | यहाँ के मजदूरों की मेहनत का लोहा देश-विदेश मानता है | फिर भी, बेरोजगारीसदियों से इस क्षेत्र का मुकुट बनी हुई है | आज़ादी के पहले मॉरिशस, फिजी, त्रिनिदाद और ऐसे दूर-दराज के देशावर जाने वाले लोगों में भी इधर लोगों की ही अधिकता थी | बाद में जब कलकत्ता हमारे देश की आर्थिक राजधानी बनी तो 'सइयाँ गए कलकत्ता' के रूप में इस क्षेत्र की नायिकाओं की विरह वेदना आज तक लोकगीतों में सुनी जा रही है | बाद में मुंबई, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और गुजरात आदि क्षेत्रों सहित विदेशों में खाड़ी के देशों तक यहाँ के श्रमिकों ने अपने पसीने बहाए और आज भी बहा रहे हैं | फिर भी, इन क्षेत्रों में विकास के पहिये की गति अब भी धीमी ही है जिसे यहाँ से गुजरने वाली रेलगाड़ियों में बेरोजगारों की ठेलमठेल के रूप में प्रतिदिन देखा जा सकता है | यदयपि कि विश्वबाजार के पाँव आज यहाँ तक भी फ़ैल गए हैं और टेलीविजन पर चमकते चेहरे यहाँ के लोगों में भी नित नए सपने जगा रहे हैं | बेरोजगारी की तरह ही यह क्षेत्र अंधविश्वासों का भी पुराना अड्डा रहा है जिसे कम करने में शिक्षा का बढ़ता प्रतिशत भी असफल ही रहा | वैसे तो, आज पूरे देश में विश्वबाजार की तरह ही तांत्रिकों का बाज़ार भी शहर से गाँव तक अपना जाल फैलाए हुए है |

स्वाभाविक है कि आस-पास कल-कारखानों की कमी होने के कारण रोजगार की तलाश में इन क्षेत्रों के युवा पुरुष ही बाहर जाते हैं | वृद्ध, बच्चे और महिलायें घरों पर रह जाती हैं | ऐसे में पुरुषों की अनुपस्थिति तांत्रिक बाज़ार और विश्व बाज़ार इन दोनों को पसरने के अनुकूल अवसर प्रदान करती है | पिछले कुछ दशकों में अपने आस-पास रोजगार के अभाव और अर्थोपार्जन की बढ़ती लालसा ने अरब देशों की तरफ जाने के लिए यहाँ की युवा पीढी को प्रेरित किया है | यही कारण है कि इन क्षेत्रों में पैसों की आवक बढी है, जीवन स्तर में भी कुछ इजाफा हुआ है लेकिन व्यक्तिगत आवश्यकताओं, पारिवारिक जिम्मेदारियों और बेतहाशा बढ़ते खर्च ने जो वातावरण उत्पन्न कर दिया है उससे यहाँ का सामान्य जन-जीवन पहले से अधिक अशांत और भयावह बन गया है | इसी अशांति और भयावहता का सजीव चित्रण हिन्दी की प्रसिद्ध रचनाकार नाशिरा शर्मा ने अपने उपन्यास 'कागज़ की नाव' में किया है |

यह उपन्यास वैसे तो उत्तर प्रदेश और बिहार के उन परिवारों की सच्चाई व्यक्त करता है जिन परिवारों के पुरुष खाड़ी देशों में नौकरी के लिए गये हुए हैं| वहाँ रात-दिन एक कर पैसे कमाते हैं, अपने घर के सदस्यों के लिए पैसे भी भेजते हैं लेकिन वर्ष-दो वर्ष बाद जब वे लौट कर घर आते हैं तो केवल निराशा ही उनके हाथ लगती है | उनके लिए 'कमा-कमा कर घर भेजते जाने में ही मुक्ति है, आज के गौतम बुद्ध की यही नियति है|' घर की अशांति, पारिवारिक सदस्यों की आपसी कलह के साथ - साथ अनेक समस्याएं परिस्थितियों के कारण भी उत्पन्न हो जाती हैं, जिनका समाधान करते-करते उनके पुनः वापस अपनी नौकरी पर चले जाने का समय आ जाता है| नाशिरा जी ने इस क्षेत्र के उन स्याह-श्वेत सभी पक्षों को अपने उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त किया है जिनसे वहाँ का हर व्यक्ति आज जूझ रहा है | उपन्यास से गुजरते हुए तमाम ऐसे चित्र हमारे समक्ष उभरने लगते हैं जिनके हम भी कभी प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं या कभी किसी न किसी रूप में उस दंश को हमने भी झेला है, महसूस किया है | उपन्यास का प्रारंभ लाचारी और बेबसी में घुट-घुट कर जीने वाले उस जहूर मियाँ की चिंता से होता है जिनका बेटा सउदी कमाने के लिए गया है | पति की अनुपस्थिति में एक मनचले युवक के साथ बहू के पैर फिसलते देखकर भी उनके पास उसे रोकने की कोई उपाय नहीं सूझ रही है -'पता नहीं किस गुनाह की सजा मिल रही है मुझे ? --- बुजुर्ग औरतों की उतनी बुरी हालत नहीं है, जितनी मर्दों को बिधुर पाकर बहुओं नें अपना हिसाब बेबाक कर दिया है | मर्द बोलें क्या ? इफ्तेखार मियाँ बोले थे तो बहू नें उनकी पाकदामनी पर कीचड की छीटें उछाल दीं | बेटों की नज़रों में जो गिराया सो गिराया नाते - रिश्तेदारों, मोहल्ले और दोस्तों तक में उन्हें रुसवा करके रख दिया | जहूर मियाँ की रूह वह वाकया याद करके काँप उठी |'जहूर मियाँ की यह लाचारी केवल एक विधुर की लाचारी नहीं है बल्कि इस आयु वर्ग के सम्पूर्ण पुरुषों की लाचारी है | बीबी कब्र में, बेटा विदेश में, बेटी द्वारा ससुराल में आत्महत्या कर लेने के बाद से मुकदमा चल रहा है, बहू अपने बच्चों की पढाई का तर्क देते हुए पास के शहर में आ गई | अपने गाँव, पूर्वजों के घर और पुराने मित्रों से दूर बेबश जहूर मियाँ का चित्रण जिस मार्मिकता और यथार्थता के साथ नाशिरा जी नें यहाँ प्रस्तुत किया है वह अत्यंत कारुणिक बन गया है | जिस गाँव की मिट्टी में पला-बढा और पूरा जीवन जहाँ खपा दिया, वहाँ से उखड कर बुढापे में नितांत पराये लोगों के बीच जाने का जो दर्द इस पात्र की बेबशी से उभरता है उसमें सम्पूर्ण परिवेश बोल उठा है | यह लाचारी जहूर जैसे उन लाखों बूढों की है जिन्हें अपनी ही संतानों द्वारा गाँव के खुले वातावरण से उठाकर शहरों के तंग कमरों में बंद कर दिया जा रहा है | उसके बाद भी बेटे से बात करने की तहज़ीब सिखाते हुए बहू की चेतावनी -'यह लीजिये मोबाइल, रात को उनका फोन आएगा | मेरी शिकायत न करिएगा, समझे |'उपन्यास के इन पन्नों से गुजरते हुए ये सारे चित्र हमारे समक्ष रूपायित हो उठते हैं | लेखिका उत्तरप्रदेश और बिहार के जिस परिवेश से जहूर मियाँ जैसे पात्र की सर्जना करती हैं वहाँ भी अब गरीबी उस स्तर की नहीं रह गई है जिस स्तर पर पचास वर्ष

पहले हुआ करती थी | खाड़ी देशों और अन्य बड़े शहरों से आने वाली कमाई ने लोगों के जीवन स्तर को बदल दिया है | सुविधाभोगी कीड़ा लोगों के मन में अपनी पैठ जमा चुका है शायद इसीलिए अब गाँव के प्रति एक अरुचि लोगों में ही उत्पन्न हो गई है | थोड़े भी पढ़े लिखे लोग अब गाँवों में रहना नहीं चाहते|यहाँ तक अपनी बोली भोजपुरी के प्रति तो जैसे एक घृणा सी उत्पन्न हो गई है - 'बबुनी नहीं बेबी कहो|' बहाना है बच्चों की पढाई का | जहूर मियाँ की बहू महलका जैसे पात्रों के माध्यम से लेखिका ने इस पक्ष को पूरी सच्चाई के साथ अभिव्यक्त किया है | उपन्यास की कथा पात्रों के साथ ही शहरों और गाँवों के बीच आवाजाही करती रहती है जो उपन्यास की रोचकता का एक मुख्य कारण भी है |

इन क्षेत्रों में जो कुछ नहीं बदला है, उनमे से मुख्य है - लोगों के बीच फैला अंधविश्वास और दूसरा, सास बहू के झगड़े | धर्म के नाम हिन्दू-मुस्लिम भले ही अपनी-अपनी राग अलापते हों लेकिन अंधविश्वास के दरवाजे पर दोनों समान रूप से मत्था टेक रहे हैं | बच्चन जी के समय इन दोनों धर्मावलम्बियों का मेल कराने वाली मधुशाला जो कार्य कर रही थी वही कार्य नाशिरा जी के लिए इस क्षेत्र में अंधविश्वास कर रहा है|यहाँ लेखिका नें यह स्पष्ट कर दिया है कि किसी की बीमारी ठीक करने से लेकर किसी का घर फोड़ने, दुश्मन को मारने और पत्नी द्वारा पति पर नियंत्रण करने, खोये हुए की तलाश करने जैसे लगभग सभी कार्यों की दवा आज हमारे तांत्रिकों के पास उपलब्ध है|इन सबके लिए उन्हें 'मुहमांगी रकम भी दी जाती है' | आज यह तांत्रिकी न केवल इन ग्रामीण क्षेत्रों में बल्कि बड़े महानगरों में भी कमाई का अच्छा स्रोत बन गई है | इस उपन्यास में इस प्रकार के अंधविश्वासों की वास्तविक घटनाएं प्रस्तुत की गई हैं | क्षेत्र में फैले इस अंधविश्वास को लेखिका के ही शब्दों में ही देखिये -'पूरा शहर न सही मगर आधे शहर की औरतें खुदा और ईश्वर से ज्यादा आमिलों और ओझाओं के करिश्में और जादू टोने पर यकीन रखने लगीं थीं क्योंकि उन्हें मियाँ के दिल पर हुक्मरानी और ससुराल वालों के दिल जीतने की जगह मियाँ की कमाई पर कब्ज़ा करने की तमन्ना थी ताकि वह खुलकर अपनी मर्जी से जी सकें | इस सोच में अनपढ़ से ज्यादा पढी-लिखी महिलायें शामिल थीं |' लेखिका द्वारा यहाँ महिलाओं के जागरण की बात भी कही गई है | ये महिलायें 'किसी प्रकार का अत्याचार, अंकुश और जकड़न सहन करने की कायल नहीं' रह गई हैं| इसे नारी स्वातंत्र्य कहें या कहें कि अपने अधिकारों से अच्छी तरह परिचित होने लगी हैं लेकिन अपने सुखों की चाहत पूरी करने के लिए अंधविश्वासों के जाल में यह वर्ग जिस प्रकार उलझता जा रहा वह हमारे समाज के लिए विचारणीय है | स्वाभाविक है कि, सुखों की यह चाहत व्यक्तिगत स्तर पर ही अधिक है लेकिन यदि हमारी आधी आबादी इसी लालच के शहद में डूब रही हो तो एक स्वस्थ समाज की परिकल्पना भी बेमानी होगी | पूरे उपन्यास में लेखिका इन अंधविश्वासों को निराधार बताते हुए इन्हें त्यागने और व्यावहारिक बनने के सन्देश देती हैं | इस रूप में सदियों से समाज में विद्यमान अंधविश्वासों के विरुद्ध लोगों को सचेत करने वाली एक घंटी है यह उपन्यास | लोगों के जीवन पर भावी संकटों के डर के रूप में यह अंधविश्वास इस प्रकार छाया हुआ है कि 'जब माँएं लडकियाँ विदा करती हैं तो घर तोड़ने के नुस्खे, रिश्ते फोड़ने की तावीजें साथ करती हैं और जब बहू ब्याह कर घर लाती हैं तो उसके पर्स से लेकर सामान तक की जामातलाशी ले लेती हैं| ताकि कोई चीज बेटे को खिला कर अपना न बना ले | यहाँ तक कि बेटे को सख्त हिदायत होती है कि वह न बीबी को मायके भेजे, न खुद ससुराल जाए |'आज आवश्यकता है ऐसी मानसिकता से बाहर निकलने की | इसी आवश्यकता को बल देने का कार्य करता है यह उपन्यास |

उपन्यास की एक प्रमुख पात्र मजहबी अपनी बेटी को उसकी ससुराल के संयुक्त परिवार से अलग कराने वाली ताबीज़ मांगती हुई आमिल से कहती है 'आप ऐसी ताबीज़ दें कि बेटी अपने हिस्से की जायदाद लेकर अलग हो जाय |' मजहबी अपनी बड़ी बेटी महलका का जीवन सुखी बनाने के लिए आमिल बदरुद्दीन से पहले भी ताबीज ले चुकी है जिसके प्रभाव से ननद ने 'गर्दन में फाँसी लगा ली, मियाँ उसका मर खप गया' लेकिन 'बुड्ढा (ससुर) मरने का नाम नहीं ले रहा है, ऊपर से बाप बेटे के ताल्लुकात फिर खुश गवारी की तरफ बढ़ रहे हैं |' उपन्यास के प्रारंभ में मजहबी उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो दूसरों के विनाश में ही अपनी खुशी तलाशते हैं | इसीलिये वह अपनी दूसरी बेटी माजदा के विवाह के समय भी इस प्रकार के ताबीज़ के लिए आमिल के पास जाती है लेकिन पता चलते ही माजदा इसका विरोध करती है ' मम्मी मुझे यह सब पसंद नहीं| यह गैर मजहबी और गैर इंसानी हरकत है |' ---दूसरों का बुरा चाह कर अपना भला क्या होगा, इसमें मुझे शक है |' बेटी माजदा के सख्त विरोध और पति अमजद के लम्बे प्रयासों के बाद मज़हबी का विचार पूर्णतः बदल जाता है | यहाँ तक कि वह अंधविश्वासों की विरोधी बन जाती है- 'अब अमल की चीजों की नहीं आमाल ठीक करने का वक्त है |' इस रूप में यह उपन्यास अंधविश्वासों से मुक्ति का एक मार्ग प्रशस्त करता है | जिसके लिए युवा वर्ग को खड़े होने की जरूरत है | अकेले अमजद अपनी पत्नी को समझाने में कमजोर पड़ रहे थे लेकिन बेटी के समर्थन ने उनकी दबी भावना को बल दिया और अंधविश्वास की हार हुई | लेखिका अपने समाज में विद्यमान इस समस्या के कारणों की तह तक जाने का सफल प्रयास करती हैं | आज हमारे समक्ष यह प्रश्न तो उठता ही है कि इस वैज्ञानिक युग में भी लोग अन्धविश्वास के इन मामलों में क्यों धंसते जा रहे हैं ? उत्तर भी मिल जाता है कि मजहबी अपनी बुआ के जीवन की कुछ घटनाओं से प्रभावित थी और वही अपने जीवन में अपनाए हुई थी| यहाँ लेखिका का स्पष्ट संकेत है कि यदि हमें एक स्वस्थ समाज की परिकल्पना करनी है तो माजदा जैसे युवा वर्ग को आगे बढ़ने की जरूरत है | हमें यह समझना होगा कि इस प्रकार के अंधविश्वास व्यक्ति , समाज और राष्ट्र हर स्तर पर तोड़ने का ही कार्य करते हैं | जिससे हमें हर कदम पर अपमानित होना पड़ता है | अमजद जैसे पात्र के माध्यम से लेखिका नें एक पति की पीड़ा कोबखूबी चित्रित किया है जिनका परिवार उन्हीं की पत्नी के अन्धविश्वासी होने के कारण टूट जाता है |

लेखिका इस उपन्यास के माध्यम से खाड़ी देशों में फैले अंधविश्वासों और उनके प्रति बने सख्त कानूनों की चर्चा करके यह संकेत देती हैं कि विश्व के किसी भी कोनेमें यदि अंधविश्वास हैतो वह मानवता का दुश्मन ही है| इसलिये यह उपन्यास हमारे समक्ष यह प्रश्न भी खडा करता है कि जब 'ओमान जैसा नन्हा सा देश ऐसी बकवास बातों पर रोक लगा कर मृत्युदंड देने का क़ानून बना सकता है तो फिर हमारे विशाल देश में यह अंधविश्वास के कर्मकांड करने वाले खुलेआम कैसे घूम रहे हैं |' यहाँ एक सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह भी विचारणीय है किहिन्दी लेखकों का एक बड़ा वर्ग लम्बे समय से अंधविश्वासों को किसी न किसी रूप में धर्म से जोड़ कर देखता रहा है और इन सबका जिम्मेदार जिम्मेदार धर्म को ही ठहराता रहा है ऐसे में नाशिरा जी धार्मिक अंधविश्वासों पर करारी चोट भी कर लेती हैं, उनके समूल विनाश की बात करते हुए एक स्वस्थ समाज की परिकल्पना भी प्रस्तुत कर देती हैं और, किसी भी धार्मिक भावना को किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं ठहराती हैं | यह निश्चित ही लेखिका की कथा लेखन की चतुराई और समाज की जमीनी सच्चाइयों से रूबरू होने की परिणति ही कही जा सकती है |

जिन क्षेत्रों से इस उपन्यास की कथा गुजरती है वहाँ से खाड़ी देशों की तरफ जाने वाले युवकों में निम्नमध्यवर्ग की संख्या ही सर्वाधिक रहती है | धार्मिक अनुपात की दृष्टि से मुस्लिम युवक कुछ अधिक और हिन्दू कुछ कम हो सकते हैं लेकिन वहाँ जाकर सबकी स्थिति एक ही हो जाती है | प्रारंभ में तो वहाँ जाने के लिए इनके पास किराया - भाड़ा भी नहीं रहता है लेकिन माता - पिता अपने बेटे के अच्छे भविष्य के लिए अपनी जमीन तक बेचकर पैसे देते हैं | उन्हीं में दलालों की अपनी खेल चलती है जो हर स्तर पर इन लोगों से कुछ हड़प लेने की युक्ति में भिड़े रहते हैं | इनके साथ-साथ वहाँ गए युवकों की व्यक्तिगत समस्याओं को भी लेखिका नें बड़ी यथार्थता के साथ चित्रित किया है | एक अनजान जगह पर बोली-भाषा, धर्म और संस्कार आदि की भिन्नताओं के बीच अकेलेपन से जूझते अपने वतन से दूर बैठे इन युवकों को माता-पिता के प्यार-डांट, पत्नी और बच्चों से दूर रहते हुए एक पति और पिता के मन में जो भाव

उपजते हैं उन सबका चित्रण इस उपन्यास में बड़ी मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त हुआ है | बच्चे के गायब होने की सूचना पाकर उपन्यास के एक पात्र राजेश की बेबशी और उसकी आंतरिक पीड़ा के माध्यम से लेखिका नें रोजी-रोटी की तलाश में अपनी संतानों से दूर गए पुरुषों की मानसिक यातना का यथार्थ रच दिया है | इन पुरुषों के स्वनिर्वासन की यह पीड़ा यहीं नहीं समाप्त होती बल्कि उन्हें ऐसा घाव देती है जिनके दर्द को वे किसी से कह भी नहीं पाते और घुट-घुट कर मरने के लिए अभिशप्त हो जाते हैं | नाशिरा जी ने पुरुषों की उस पीड़ा को भी इस उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त करने का सराहनीय कार्य किया है | एक तरफ उस विदेशी धरती पर किसी की मृत्यु के बाद उसके शव वापसी को लेकर जो कागजी प्रक्रियाएँ चलती हैं उसे देख कर उन सभी की रूह काँप जाती है | वहीं दूसरी तरफ अपने वतन में छोड़ आये बीबी- बच्चों के साथ जो हश्र होता है वह तो उनके लिए असहनीय और अकथनीय दोनों है | नदीम का मित्र तीन वर्ष बाद जब अपने घर लौटता है तो उसका एक बच्चा खेलता हुआ मिलता है | पत्नी के चरित्र के प्रति उसका स्वाभाविक आक्रोश तब ग्लानि में बदल जाता है जब वह इसे अपने जेठ की ही करतूत बताती है जो घर के सभी सदस्यों की उपस्थिति में ही उसके घर में घुस कर जबरदस्ती करता है और सभी चुप रह जाते हैं| मलकानूर जैसी युवती सास के झगड़ों और उसकी प्रताड़ना से तंग आकर अपने बच्चे को छोड़कर एक अपरिचित वृद्ध दम्पति की सेवा-सुश्रुषा में लग जाती है | बाद में उसके परिवार के सभी सदस्यों द्वारा की गई आत्महत्या और उसका पागलपन जैसी घटनाएं इस बात की संकेतक हैं कि मानवीय रिश्तों में उत्पन्न दरारों को पैसों के बल पर कभी समाप्त नहीं किया जा सकता | मलकानूर के परिवार की समाप्ति हमारे समाज को एक बड़ा सन्देश है कि भौतिक संसाधनों से ही जीवन की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति कभी संभव नहीं है हमारे मानवीय सम्बन्धों की भूमिका जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण होती है | परिवार में पुरुषों की अनुपस्थिति हमारे समाज में आज भी अनेक समस्याओं को जन्म देती है |जिस परिवार में केवल महिलायें ही हों उसके प्रति समाज का नज़रिया ही बदल जाता| उपन्यास में इस यथार्थ को चित्रित करते हुए लेखिका ने अपने जमीनी जुड़ाव का परिचय दिया है | व्यक्तिगत स्तर पर भी मानवजीवन की कुछ प्राकृतिक आवश्यकताएं होती हैं जिन्हें सामाजिक दबाओं के डर से हम सदैव छिपाए रखने का प्रयास तो करते हैं लेकिन अवसर आते ही उन पर से हमारा नियंत्रण छूट जाता है जिसके बाद सामाजिक बदनामियों का दौर शुरू होता है लेकिन, यदि इन सबमें अपने ही सगे-संबंधी संलिप्त हों तो चुप रहने के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता भी नही बचता | यहाँ लेखिका नें समाज में घटित हो रही वाह्य घटनाओं का सजीव चित्रण तो किया ही है पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए उनकी आंतरिक हलचलों का भी वास्तविक लेख-जोखा प्रस्तुत किया है | विवाह के बाद घरों में बंद युवतियों की विरह वेदना इस क्षेत्र की महिलाओं के लिए कोई नई बात नहीं है | इन महिलाओं की जो युवा पीढी खाड़ी देशों में कमाने गए अपने पतियों को याद कर रही है उस पीढी ने अपनी पिछली पीढ़ियों को उसी प्रकार बेचैनीमेंदिन बिताते देखा है | लेखिका इस पीढी की मानसिक पीड़ा को व्यक्त करते हुए लिखती हैं कि 'शायद पहले रानियाँ यूँ ही अकेली रहती हों और फ़ौज के सिपाहियों की बीबियाँ सुहागन से बेवा होने के खौफ़ से अधमरी रहती हों, हम औरतों को लेकर कुछ नहीं बदला है | पहले रेलगाड़ी बैरन होती थीं और अब पानी के स्टीमरों की जगह हवाई जहाज समंदर पार पिया को ले जाते और पीछे छोड़ जातेहैं ठन्डे बिस्तर, जिन पर लोट-लोट कर हमारी सुबह होती है और सारे दिन आँखों की जलन और बदन की टूटन के साथ घर-बाहर संभालना पड़ता है |'

पिछले कुछ दशकों में इन क्षेत्रों में नारी जीवन में भी व्यापक बदलाव आया है | लडकियाँ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में लड़कों की अपेक्षा अधिक आगे बढ़ने लगी हैं लेकिन यह विकास मानसिक स्तर से अधिक प्रदर्शन के स्तर पर हुआ है जो उनके जीवन को किसी न किसी रूप में दुष्प्रभावित ही कर रहा है | अब ' बड़ा गड़बड़ है लडकियां पढ़ लेती हैं तो उन्हें अच्छा पति नहीं, अच्छा पति है तो पत्नी नहीं, यह असमानता इन क्षेत्रों की पुरानी परम्परा रह चुकी है |' इस परम्परा में आज भी कोई बहुत बदलाव नहीं आया है | लेखिका नें क्षेत्रीय नारी जीवन के बदलाव के साथ-साथ सीरिया, लेबनान और फिलिस्तीन जैसे छोटे देशों की महिलाओं के जीवन में आये वास्तविक बदलाओं का भी चित्रण किया है जहाँ उनकी आर्थिक और व्यावहारिक प्रगति ने समाज को विशेष रूप से प्रभावित किया है |इसलिए नाशिरा जी का मानना है कि हमारे समाज में 'जितनी दिमागी तालीम की जरूरत है, वह औरतों को हम नहीं दे पा रहे हैं | सिवाय बाज़ार और खरीददारी में हम उनको डुबो चुके हैं |'

लेखिका द्वारा चित्रित बाज़ार का यह नशा आज पूरे समाज पर छाया हुआ है जो भौतिक संसाधनों से घर को तो भर रहा है लेकिन जीवन की शांति खुले बरतन में रखे कपूर की तरह उड़ रही है | उपन्यास का एक पात्र मनोज अपनी पूरी कमाई घर भेजता जाता है और पत्नी बाज़ार से वह सारी चीजें खरीद कर घर को सजाती है जिनकी उस क्षेत्र में कोई विशेष आवश्यकता या उपयोग नहीं है | विविध अनावश्यक संसाधनों से भरा घर और खाली बैंक अकाउंट देखकर मनोज तड़प उठता है और अपने मित्र जाकिर से कहता है 'देखो हमारी जनानी की शान -हमारे घर में तीन-तीन ए. सी. लगे हैं--- सोफा देखो---मसहरी देखो---वहाँ नाक हम शेखों के सामने घिस रहे थे, यहाँ नाक इतनी ऊँची हो रही थी |' भौतिक संसाधनों के बल पर नाक ऊँची कर लेने की यह सनक हमारे परिवारों की सुख-शांति को पहले से ही लीलती रही है और आज भी वह प्रक्रिया यथावत जारी है | इतना ही नहीं इन संसाधनोंकी बढ़ोत्तरी ने हमारी नई पीढी को भी प्रभावित किया है | बाप- भाइयों की कमाई के महत्त्व को न समझते हुए मोटरसाइकिल, शराब और बात-बात में लड़ाई -झगड़े नवयुवकों और किशोरों की नियति बनती जा रही है |इसलिए यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि इन क्षेत्रों में वर्तमान में सामजिक स्तर पर जो कुछ आज घटित हो रहा है वह सब कुछ लेखिका ने अपने इस उपन्यास में बड़ी बारीकी और बेबाकी के साथ अभिव्यक्त किया है |

जिस क्षेत्र पर इस उपन्यास कथानक केन्द्रित है वहाँ लम्बे समय से दहेज़ एक बड़ी समस्या के रूप में विद्यमान है | सरकार द्वारा दहेज़ का लेन-देन अपराध घोषित किये जाने के बाद भी बिना किसी रोक-टोक के दहेज़ लिया और दिया जाता है| बल्कि, आज तो इसे सामाजिक सम्मान से भी जोड़ कर देखा जाने लगा है | लेखिका ने इस समस्या को तो अपने उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष बनाया ही है उसके साथ-साथ दहेज़ के लालच में लड़कों द्वारा धन उगाही के लिए जो जाल रची जा रही है उसका भी विश्वसनीय चित्रण किया है | एम. ए. की पढाई कर रही शबिस्तां के प्रिंसिपल पिता उसका विवाह पाँच लाख रूपये देकर जिस लड़के से तय करते हैं उसके सम्बन्ध में ये बताया गया है कि लड़का कमर अहमद ओमान में इंजीनियर है और दस लाख रूपये महीने की उसकी आमदनी है लेकिन बाद में पता चलता है कि वह तो एक सामान्य मेकेनिक है और जनरेटर आदि के माध्यम से शादी-विवाहों में लाइटिंग का काम करता है | लडकी वालों को झूठी जानकारियाँ देकर दहेज़ की उगाही और फिर अभिशप्त जीवन जीने के लिए लाचार लडकियाँ तथा सर पीटते माता-पिता की तमाम कहानियाँ हर वर्ष इन क्षेत्रों में प्रत्यक्ष रूप से देखी-सुनी जाती हैं | लड़के के विदेश में होने पर इस प्रकार के झूठ आसानी से बोल लिए जाते हैं और उनकी बातों पर सहजता पूर्वक विश्वास भी कर लिया जाता है |

लेखिका इन सबका एक कारण बेरोजगारीमानती हैं | समाज में हर तरह का झूठा दिखावा लोगों की नियति बनती जा रही है जिसकी पूर्ति के लिए कोई सरल रास्ता न मिल पाने पर हमारी युवा पीढी अपराध की तरफ प्रवृत्त हो रही है| टी. वी. चैनलों पर चलने वाले अपराध की पृष्ठभूमि पर आधारित कार्यक्रम इस प्रकार के अपराधों को और बढावा देने का कार्य कर रहे हैं | दहेज़ के लिए झूठ बोलने वाला कमर अहमद पकडे जाने पर कहता है 'आप लोग नहीं समझ सकते हमारी परेशानी| हमारे पास जुर्म के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा है | जो बात आपको जुर्म लगती है उसमें हमको अपनी रोजी-रोटी की उम्मीद नज़र आती है |

भूखा पेट कुछ भी करा सकता है कुछ भी |' नाशिरा जी की दृष्टि में इन बढ़ते अपराधों के पीछे कहीं न कहीं हमारी शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक-पारिवारिक संस्कारों में भी कुछ कमियाँ हैं | पूरी तरह से उद्देश्यहीन युवा पीढी कहीं शौक के रूप में, कहीं लाचारी में तो कहीं अपने आस-पास के ही किसी सम्मान पाते अपराधी से प्रेरित होकर इन असामाजिक कार्यों की तरफ अग्रसर हो रही है | इस सच्चाई को स्वीकार करते हुए उपन्यास के एक पात्र मास्टर जी अपने मित्र से कहते हैं कि -' गलती तो दोस्त हमारी है| हम उस्ताद होकर, नई पीढी को न उम्मीद दे पा रहे हैं, न एतमाद, न मुस्तकबिल की गारंटी |'

बहन की मृत्यु के बाद जाकिर द्वारा उसके घर वालों पर मुकदमा और मुकदमे में जीत के बाद भी उसके भांजे सलीम का अपने मामा के साथ न आना जैसी घटना इसी बात की तरफ संकेत करती है कि जीवन में स्नेह और मानवीय सम्बन्धों का प्रभाव कानून और भौतिक संसाधनों से अधिक महत्त्वपूर्ण है | ट्रेन में मलकानूर के पर्स तथा मोबाइल आदि का गायब हो जाना समाज में फैले अपराध एवं निष्ठुरता के परिचायक हैं तो उपन्यास के अंत में अपने सम्पूर्ण परिवार को गवाँ चुकी मलकानूर को डायन घोषित करते हुए मिर्च की धौंस देना और अधमरा करके बहते नाले में फेंक देना जैसी हृदयविदारक घटना एक बार इस क्षेत्र में गहराई तक जड़ जमा चुके अंधविश्वासों की गवाही देती है | इस प्रकार यह उपन्यास पूर्वी उत्तरप्रदेश और पश्चिमी बिहार की एक सामाजिक महागाथा कहा जा सकता है| आर्थिक विपन्नता और बेरोजगारी निश्चित ही इस क्षेत्र के लिए अभिशाप हैं लेकिन लोगों के जीवन को नारकीय बनाने में समाज में फैले अंधविश्वासों की भी अहं भूमिका है | यहाँ एक बात विचारणीय अवश्य है कि शिक्षा के बढ़ते प्रतिशत के आंकड़े भी अंधविश्वासों को समाप्त करने में पूर्णतः असफल सिद्ध हो रहे हैं | पात्रों और परिवेश के साथ बदलती भाषा और बोल चाल की शैली इस उपन्यास के जमीनी जुड़ाव की विश्वसनीयता को बढावा देती है | उपन्यास की लगभग सभी घटनायें एक दूसरे से इस प्रकार जुड़ी हैं कि आगे बढ़ने पर स्वतः खुलती - उभरती और अपने पक्षों को व्यक्त करते चलती हैं | नाशिरा शर्मा जी का लेखन कार्य निरंतर जारी है इसलिए इस प्रेरक उपन्यास के लिए उन्हें हार्दिक बधाई और नई रचनाओं के लिए शुभकामनायें |

अस्तु |

----------00--------

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u>

लेखक के स्वतंत्रत विचार

----------00--------